Central Water Commission
Technical Documentation Directorate
Bhagirath(English)& Publicity Section
****

West Block II, Wing No-5
R K Puram, New Delhi – 66.

Dated 22.2.18

Subject: Submission of News Clippings.

The News Clippings on Water Resources Development and allied subjects are enclosed for perusal of the Chairman, CWC, and Member (WP&P/D&R/RM), Central Water Commission. The soft copies of clippings have also been uploaded on the CWC website.

22.2.18
SPA (Publicity)

Encl: As stated above.

Deputy Director (Publication) 22/2/18

For information of Chairman &Member (WP&P/D&R/R.M.), CWC and all concerned, uploaded at www.cwc.nic.in

News item/letter/article/editorial published on 22/2/18 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi) ✓

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC

राजधानी में गर्मी ने दस्तक दी

दि-22-2-18

नई दिल्ली | कार्यालय संवाददाता

राजधानी में गर्मी के मौसम ने दस्तक दे दी है। राजस्थान की ओर से आने वाली पश्चिमी हवाओं के चलते बुधवार को अधिकतम तापमान 31.7 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। यह सामान्य से सात डिग्री सेल्सियस अधिक है।

मौसम विभाग के अनुसार, इस वर्ष पहली बार अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक पहुंचा है। वहीं, न्यूनतम तापमान 12.5 डिग्री सेल्सियस रहा। यह सामान्य से एक डिग्री सेल्सियस अधिक है।

वहीं, राजधानी में गुरुवार भी को अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस के करीब रहेगा। वही, न्यूनतम तापमान 12 डिग्री सेल्सियस के करीब रहेगा। सुबह के समय आसमान साफ रहने व हवा में आर्द्रता रहने की भी संभावना है।

मौसम वैज्ञानिक कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि एक तरह देखा जाए तो सर्दियों का मौसम जाने लगा है। 15 फरवरी के बाद से अधिकतम तापमान में इस तरह के बदलाव देखे जाते हैं। हालांकि 24 फरवरी को एक पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से पहाड़ों में जहां बारिश होने की संभावना है। वहीं मौसम में इस बदलाव से दिल्ली व आसपास के इलाकों में भी तापमान में कमी देखी जाएगी। फिर भी अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस के करीब बना रहेगा।

विभिन्न इलाकों में तापमान

जगह	अधिकतम	न्यूनतम
पालम	32.2	14.2
लोधी रोड	31.4	12.3
रिज	32.1	15.4
आयानगर	31.8	13.1
जाफरपुर	28.8	12.5

(सभी आंकड़े मौसम विभाग के अनुसार है। तापमान डिग्री सेल्सियस में है।)

News item/letter/article/editorial published on 22/2/18 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC

वैश्विक स्तर पर बाढ़ और सूखा बढ़ रहा है। इस जल संकट के कारण कई के देशों के नागरिक मजबूरीवश दूसरे देशों में पलायन कर रहे हैं। बढ़ते जल संकट और पलायन का जिम्मेदार विकास के आधुनिक मॉडल को माना जा रहा है। यदि विकास का मॉडल इसका जिम्मेदार है तो फिर इसे कैसे रोका जाए? क्या हो विकास का नया मॉडल...

पत्रिका-22-2-18

जल संकट: बढ़ रहा विस्थापन का दर्द!

राजेन्द्र सिंह
पर्यावरणविद्

सामुदायिक नेतृत्व के लिए रमन मैगसेसे एवं जल संरक्षण कार्य के लिए स्टॉकहोम जल पुरस्कार से सम्मानित

विश्व में अब बाढ़ और सूखा दोनों बढ़ रहे हैं। इससे भारत सहित कई देश जल संकट से जूझ रहे हैं। मध्य एशिया और अफ्रीका के देशों में लोग लाचारी, बीमारी और बेकारी आदि के कारण मजबूरी में विस्थापन कर रहे हैं। मजबूरी में किए गए ऐसे विस्थापन से दुनिया में युद्ध की स्थिति बन रही है। विश्व में जहां पर युद्ध चल रहा है वहां पर इसे केवल युद्ध के रूप में ही देखा जा रहा है। इन युद्धों की गहराई में जाएंगे तो कहीं न कहीं जल ही इनके मूल में मिलेगा। मैंने पिछले वर्ष अक्टूबर में फरात नदी की यात्रा की। तुर्की में जहां से यह नदी शुरू होती है वहां से यात्रा की शुरुआत की और इराक में यात्रा समाप्त हुई। यात्रा के दौरान मैंने देखा कि तुर्की में 6 बैराज और अतातुर्क नाम का बांध बना गया और इससे नदी का बहाव रुक गया। बहाव रुकने के कारण सीरिया के लोग बिना पानी और खेती की वजह से पलायन करने लगे। उनका यह पलायन एक तरह का मजबूरी में हुआ विस्थापन था। ऐसे वक्त में कुछ तुर्की के लोग पहुंचे और उन्हें आश्वासन दिया कि वे जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन आदि यूरोपीय देशों में पहुंचा देंगे। इससे बहुत सारे लोग अपना देश छोड़कर तुर्की के कैंप में शरणार्थी के रूप में रहने लगे। शरणार्थी कैंप से सबसे ज्यादा संख्या में लोगों को जर्मनी भेजा गया। दूसरे स्थान फ्रांस का रहा। इसके बाद स्वीडन, नीदरलैंड्स आदि देशों में जहां-जहां इन लोगों को मौका मिला वहीं ये लोग पहुंचे। ये लोग मजबूरी में वहां गए थे तो इन्हें इन देशों से कोई प्यार या मोह नहीं था और ये लोग वहां लंबे समय तक रहना भी नहीं चाहते थे। ऐसे में वहां तनाव उत्पन्न हो गया। ऐसी स्थिति में जर्मनी की सरकार अहिंसक तरीके से इन्हें वहां से वापस उनके देश में भेजना चाहती थी। इसके लिए जर्मन सरकार ने विभिन्न क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को आमंत्रित किया जिसमें मैं भी शामिल था। जर्मनी की सरकार ने जानना चाहा कि शरणार्थियों का अहिंसक तरीके से विस्थापन कैसे किया जाए? मैंने उन्हें भारत के अनुभव बताए और राजस्थान का उदाहरण दिया जहां लोग पानी की कमी की वजह से शहर में आए थे पर जब गांवों में पानी आ गया तो वे वापस गांव जाकर खेती करने लगे। भारत का जो विस्थापन है वो जबर्दस्ती का विस्थापन नहीं है वो एक देश के अंदर का विस्थापन है। पर सीरिया के लोगों का विस्थापन मजबूरी और युद्ध का विस्थापन है। ऐसे में युद्ध की स्थिति में पुनर्विस्थापन करना कठिन है। सबसे पहले तो वहां युद्ध बंद हो फिर वहां की जमीन के

मध्य एशिया और अफ्रीका में लोग मजबूरीवश विस्थापित हो रहे हैं। मजबूरी के विस्थापन से दुनिया में युद्ध की स्थिति बन रही है। जहां पर युद्ध चल रहा है वहां पर इसे केवल युद्ध के रूप में ही देखा जा रहा है। इन युद्धों की गहराई में जाए तो कहीं न कहीं जल ही इनके मूल में मिलेगा।

भारत में आने वाले समय में जल और अन्न की समस्या के चलते पलायन हो सकता है। क्योंकि अभी विकास का जो मॉडल अपनाया जा रहा है वो मॉडल भारत का नहीं रहा है।

लिए पानी मिले और उनका खत्म हुआ जल का अधिकार उन्हें वापस मिले तो ऐसी स्थिति में ये लोग वापस जाना पसंद करेंगे। यही अहिंसक तरीका होगा। जर्मन सरकार ने इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए तीन बार ऐसी बैठकें की। पुनर्विस्थापन तब होता है जब लोगों को जीने के लिए भोजन, मकान, पर्यावरण आदि की सुरक्षा मिले। ऐसे में लोग वापस अपने घर जाना पसंद करते हैं। सीरिया के लोगों को वापस भेजने के लिए भी ऐसी ही व्यवस्था करनी पड़ेगी। मध्य एशिया और अफ्रीका के देशों में इस वक्त ऐसे ही कारणों से पलायन हो रहा है। भारत में आने वाले समय में जल और अन्न की समस्या के चलते ऐसा ही पलायन हो सकता है। अभी जो विकास का रास्ता अपनाया जा रहा है वो रास्ता हमारा नहीं है। भारत के लोग प्रकृति को प्रेम करते थे और जब तक प्रकृति को प्रेम करते रहे तब तक विश्व गुरु बने रहे। अब देश के लोगों ने प्रकृति को प्रेम करना छोड़ दिया। आज हम विकास से प्रेम करते हैं। हमारी सरकार भी विकास को प्रेम करती है। ऐसी स्थिति में राज और समाज जब दोनों विकास के अंधेभक्त बन जाएं तब ऐसी स्थिति में विस्थापन शुरू होता है। फिर उसमें विकृति निकलती है फिर अंत में विनाश होता है। फिलहाल हम जिस विकास के रास्ते पर चल रहे हैं वो विनाश की ओर ही ले जाता है इसलिए समय रहते हमें अपने विकास के रास्ते पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। यदि इस विकास का रास्ता नहीं बदला गया तो भारत को भी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। क्योंकि अभी भारत जिस विकास के रास्ते पर चल रहा है वो एक डेंजरस लैंडस्कैप बना रहा है जिससे बाढ़ और सूखा बढ़ रहा है। जल की वजह से सीरिया में हुए विस्थापन से भारत शिक्षा ले सकता है। सीरिया में भारत से भी दो हजार साल पूर्व खेती की जाती थी लेकिन वो आज उजड़ गया। भारत, सीरिया के मुकाबले बड़ा और शक्तिशाली देश है। लोगों को पानी, शिक्षा, भोजन और जलवायु जैसी चीजें जब उपलब्ध नहीं होती हैं तो वे अपना देश छोड़ते हैं। हम अपने सनातन ज्ञानतंत्र से सीख सकते हैं। भारत के लोग जब अपने भगवान को प्रेम करते थे तब विनाश का ऐसा रास्ता नहीं था। उस समय भगवान से तात्पर्य था- भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु और न से नीर। इसी भगवान को भारत के लोग वैदिक काल तक मानते रहे हैं। तब तक कोई दूसरा भगवान या राजा नहीं था। इसके राजा बनने लगे तो उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में देश को बांटा। इसलिए भारत को 21 वीं सदी में विकास के सनातन और स्थाई रास्ते ढूंढने होंगे।

m/letter/article/editorial published on 22/2/18 in the

ustan Times
esman
he Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC

हरियाणा ने माना, भेज रहे गंदा पानी

दिल्ली के अधिकारियों से हुई मीटिंग, नहीं दिया साफ पानी का भरोसा

Poonam.Gaur@timesgroup.com

नभा-22-2-18

■ **नई दिल्ली** : हरियाणा से दिल्ली को 80 क्यूसेक गंदा पानी भेजा जा रहा है, जिसमें अमोनिया का स्तर बढ़ा हुआ है। दिल्ली जल बोर्ड और हरियाणा सरकार के अधिकारियों के बीच हुई मीटिंग में हरियाणा ने दिल्ली को गंदा पानी भेजने की बात मानी है। हालांकि करीब 1005 क्यूसेक साफ पानी भी हरियाणा से दिल्ली को दिया जा रहा है।

दिल्ली में बीते 45 दिनों से चल रहे जल संकट पर दोनों राज्यों में बातचीत हुई। इसमें बहुत कुछ निकलकर नहीं आया। यानी आने वालों दिनों और गर्मियों तक दिल्ली को पानी की समस्या झेलनी होगी। डीजेबी के अनुसार, हरियाणा के अधिकारियों ने माना है कि उनकी ओर से गंदा पानी दिया जा रहा है। यह 80 क्यूसेक गंदा पानी पानीपत से आ रहा है। पानीपत का इंडस्ट्रियल वेस्ट इसमें मिलने से यमुना में अमोनिया का स्तर बढ़ा है। मीटिंग में हरियाणा प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड के अधिकारियों ने दिल्ली को भरोसा दिया कि वह पानीपत में ऐसे उद्योगों पर कार्रवाई करेगा, जिनके केमिकल वेस्ट से पानी प्रदूषित हो रहा है।

डीजेबी अधिकारियों के अनुसार, पानी संकट कब तक दूर होगा यह हरियाणा सरकार की कार्रवाई पर निर्भर करेगा। अधिकारियों ने बताया कि हरियाणा से यमुना में साफ पानी छोड़ने को कहा गया, जिस पर भरोसा नहीं दिया गया है। मीटिंग हरियाणा और दिल्ली के चीफ सेक्रेटरी के बीच होनी थी, लेकिन दिल्ली के चीफ सेक्रेटरी इसमें शामिल नहीं हुए। हरियाणा की तरफ से चीफ सेक्रेटरी डीएस ढेसी, हरियाणा स्टेट प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी शामिल हुए। डीजेबी की तरफ से सीईओ एके सिंह के साथ कुछ अधिकारी पहुंचे। हरियाणा ने कहा कि समझौते के तहत उसे दिल्ली को 791 क्यूसेक पानी रोज छोड़ना होता है। एनजीटी के आदेश के बाद 1085 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। वहीं, हरियाणा के अधिकारियों ने डीजेबी को अपने प्लांटों में सुधार का सुझाव भी दिया है।

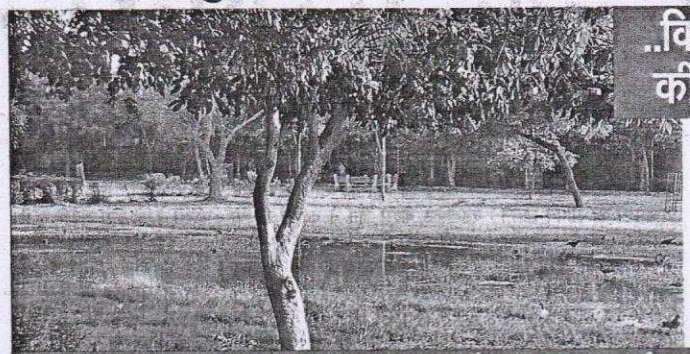

..किल्लत के बीच पानी की बर्बादी का नजारा

किल्लत के बीच यह तस्वीर पानी की बर्बादी की है। लोगों ने बताया कि द्वारका सेक्टर-6 के डीडीए पार्क में डीजेबी की अंडरग्राउंड पाइपलाइन काफी समय से लीक कर रही है। इस कारण यहां पार्क में पानी भरा रहता है। रेजिडेंट अनिल पाराशर ने बताया कि अधिकारियों से इसकी शिकायत कई बार की जा चुकी है। पानी भरने से पास की सड़क भी खराब हो गई है।

ज्यादा इस्तेमाल करने पर लगेगा एक्स्ट्रा चार्ज

■ प्रमुख संवाददाता, नई दिल्ली

राजधानी में पानी की किल्लत को लेकर अब कई आरडब्ल्यूए मीटिंग करने लगी हैं। कुछ ने तो नोटिस भी लगा दिए हैं। इनमें साफ कहा गया है कि जिन घरों में पानी की खपत ज्यादा होगी, उन्हें एक्स्ट्रा चार्ज देना होगा। यही नहीं, पानी एक दिन छोड़कर देने का नोटिस भी कई सोसाइटियों में लगाया गया है।

यमुना में अमोनिया बढ़ने से हुई पानी की किल्लत बड़ा रूप ले चुकी है। तापमान बढ़ने से बीते एक सप्ताह में पानी की डिमांड में भी इजाफा हुआ है। जल बोर्ड के अनुसार, जब तक अमोनिया का स्तर कम नहीं होगा, यही स्थिति रहेगी। अभी दिल्ली को रोजाना 30 से 35 पर्सेंट कम पानी मिल रहा है। वेस्ट, सेंट्रल, नॉर्थ, दिल्ली कैंट और एनडीएमसी एरिया में समस्या ज्यादा है। उत्तम नगर, विकासपुरी, जनकपुरी, द्वारका, हरि नगर, झंडेवालान, करोलबाग के इलाकों में सप्लाई बहुत कम है।

द्वारका सेक्टर-12 के नीरज वशिष्ठ ने बताया कि उनकी सोसाइटी में पानी के टैंकर आ रहे हैं। विकासपुरी आरडब्ल्यूए के सुधीर ने बताया सिर्फ आधे घंटे ही पानी आ रहा है। कई जगहों पर गंदे पानी की भी शिकायत है। ऐसे में लोगों को पानी बचाने को कहा जा रहा है ताकि सभी को पानी मिल सके। उत्तम नगर आरडब्ल्यूए के विकास परमार ने बताया कि उनके यहां प्राइवेट टैंकरों से ही काम चलाया जा रहा है। डीजेबी के टैंकर समय पर नहीं आते।

दिल्ली की ग्रुप हाउसिंग सोसाइटी के हाल भी खराब हैं। डीजेबी का नोटिस मिलने के बाद कई सोसाइटियों ने बूस्टर पंप हटा दिए हैं। इससे ऊपरी मंजिलों में पानी की किल्लत हो गई है। द्वारका सेक्टर-12 के पॉकिट-5, 6, 7 में यह समस्या है। द्वारका सेक्टर-6 के हैरिटेज टावर की आरडब्ल्यूए ने लोगों से नोटिस में कहा है कि पानी कम खर्च करें वरना, 24 घंटे आपूर्ति नहीं हो पाएगी। मयूर विहार की यूनाइटेड इंडिया सोसाइटी के प्रेसिडेंट पुरुषोत्तम भट्ट ने बताया कि उनके यहां भी लोगों से पानी कम खर्च करने को कहा गया है।

फ्री सप्लाई तभी मुमकिन, जब होगी किल्लत

डीजेबी के अधिकांश टैंकर अनधिकृत कॉलोनियों, जेजे कॉलोनियों में सप्लाई के लिए जाते हैं। ऐसे में इमरजेंसी में टैंकर तुरंत उपलब्ध नहीं हो पाते। फ्री सप्लाई तभी होती है, जब किसी एरिया में पानी की किल्लत होती है। अभी डीजेबी के पास 3, 4 और 9 हजार लीटर के टैंकर हैं। 3 और 4 हजार लीटर के टैंकर तो फ्री भेजे जाते हैं, लेकिन 9 हजार लीटर के टैंकर के लिए कुछ एरिया में 700 रुपये चार्ज किए जाते हैं। हालांकि ये टैंकर भी आसानी से बुक नहीं हो पाते।

डीजेबी वॉटर टैंकर के नंबर गलत

डीजेबी के वॉटर टैंकरों के जो नंबर जारी किए जा रहे हैं उनमें से ज्यादातर नहीं लग रहे। कोई नंबर काम नहीं करता है, तो किसी पर कॉल रिसीव नहीं होती। जिन नंबरों पर कॉल रिसीव हो रही हैं, उनमें बुकिंग के लिए दूसरे नंबर दिए जा रहे हैं। 1916 सेंट्रलाइज्ड नंबर पर लोगों को टैंकर के लिए जल बोर्ड के ऑफिस जाकर पता करने को कहा जा रहा है।

Covering L., YIS